SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-2, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन

चनप्रीत कौर
शोधार्थी (जे0आर0एफ0) शिक्षाशास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ई–मेल– chanpreetkaur2012@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनौवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन से संबंधित है। इस लेख में शोधकत्री द्वारा गुरूग्रंथ साहिब के उपदेशों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने हेतु पाठ्यवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों का संकलन करने हेतु प्राथमिक स्त्रोत गुरूग्रंथ साहिब की मूल प्रतिलिपि का हिन्दी अनुवाद तथा द्वितीयक स्त्रोत के रूप में गुरूग्रंथ साहिब से संबंधित, पत्र–पत्रिकाआ,ें मैग्जीन एवं अन्य लेखकों द्वारा लिखी पुस्तकों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक पाठ्यपुस्तक विश्लेषण द्वारा किया गया है। इस प्रपत्र में शोधकत्री द्वारा स्प्लिटर कोडिंग का प्रयोग किया गया है।।। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन शिक्षा जगत को एक नया मोड़ देने में पूर्णरूप से सक्षम है।।

मुख्य शब्द– श्री गुरू ग्रंथ साहिब, उपदेश, शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य असभ्य, कुसंस्कृत एवं अशिक्षित कहलाता है। प्रत्येक समाज की शिक्षा का स्वरूप उस समाज की वर्तमान स्थिति पर

आधारित होता है। यदि किसी समाज में परिवर्तन होता है तो उस समाज की शिक्षा के स्वरूप में भी परिर्वतन होना सम्भव है। शिक्षित व्यक्ति समाज की बदलती हुई परिस्थितियों में शीघ्र ही अपने आपको समायोजित कर लेता है। शिक्षित व्यक्ति समाज के प्रत्येक प्रकार के विकास में अपना समुचित योगदान देता है।

वर्तमान युग में शिक्षा पूर्णतया विज्ञान पर आधारित है, और होनी भी चाहिए जिससे देश विकसित देशों की श्रेणी में अग्रणी बना रहें, किन्तु आधुनिकीकरण ने कहीं न कहीं मनुष्य की सोच को संकुचित कर दिया है। आज मानव केवल अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर सारे काम कर रहा है, जिस हेतु वह अपने निजी संबंधों तक को दाव पर लगा देता है।। आज का मानव अपने संस्कारों, मूल्यों एवं आदर्शों को पूर्ण रूप से भूलता चला जा रहा है। अतः शोधकत्री का ऐसा विचार है कि यदि हम अपने आदर्शों, मूल्यों एवं संस्कारों को भावी युवा पीढ़ी में जीवित देखना चाहते हैं तो हमें अपने पुरातन धार्मिक ग्रन्थों एवं उनमें वर्णित उपदेशों से उन्हें परिचित कराना होगा।

अतः शोधकत्री का ऐसा विचार एवं विश्वास है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब में मानव की चेतना एवं विकास के पथ को प्रकाशित करने वाली शिक्षा के आवश्यक तत्व विद्यमान है।। इस हेतु शिक्षा के विकास को मानव जीवन का भविष्य मानते हुए शोधकत्री भी वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर शिक्षा के नित्य, नवीन, परिष्कृत एवं चिरपुरातन स्वरूप में महत्वपूर्ण योगदान देना चाहती है।

प्रस्तुत लेख संबंधी शोध प्रश्न इस प्रकार हैः–

1– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित उपदेश बालक के मनोवैज्ञानिक विकास में कैसे सहायक है?

2– श्री गुरू ग्रंथ साहिब संबंधी उपदेशों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में क्या उपादेयता है?

3– श्री गुरू ग्रंथ साहिब संबंधी उपदेशों की मनोवैज्ञानिक विवेचना कहाँ तक सार्थक है?

शोध विधि

प्रस्तुत लेख में शोधकत्री ने शोध प्रश्नों का उत्तर देने के लिए गुणात्मक शोध पद्धति को अपनाया है। वर्तमान अध्ययन के लिए शोध प्रारूप के रूप में प्रकृतिवादी जाँच का चयन किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीयक स्त्रोत के माध्यम से आँकड़ों एवं तथ्यों का एकत्रीकरण किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत डॉ0 मनमोहन सहगल द्वारा अनुवादित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा प्रकाशित श्री गुरू ग्रंथ साहिब एवं विशेष रूप से श्री सुखमनी साहिब से संबंधित पुस्तकें, लेख, मासिक पत्र–पत्रिकायें। (जायद प्रेस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित) स्वामी अर्जुन सिंह मुनि द्वारा अनुवादित मेहर चन्द्र एवं सन्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ एवं पाण्डुलिपियां हैं। शोधकत्री

ने डेटा के बीच और आगे बढ़ते हुए अपावर्तित कोडिंग तकनीक को अपनाया है। शोधकत्री ने कोड और उनके गुणों से युक्त पूर्व–निर्धारित कोड संरचनाओं का उपयोग करते हुए, बिना किसी पूर्व–कल्पना धारणा के साहित्य के सरल पढ़ने के दो दौर के बाद कोडिंग शुरू कर दी है। हाँलाकि कोडिंग की प्रक्रिया के दौरान कोड बुक में कुछ नए कोड भी शामिल किए गए थे, इसके अतिरिक्त स्प्लिटर कोडिंग (लाइन–बाय–लाइन) कोडिंग को अपनाया गया था, जिससे उद्देश्यों आशंकाओं तथा अनसुलझे, व्यक्तिगत मुद्दों को लागू करने की संभावना कम हो गई।। सभी दस्तावेजों की कोडिंग के हर दौर के बाद कोड संरचना को संशोधित किया गया था। संशोधन के 3 दौर के बाद, अंतिम कोड संरचना का गठन किया गया था और अंतिम कोड संरचनाओं के आधार पर सभी दस्तावेजों को एक बाद फिर से संशोधित किया गया था। तत्पश्चात् इन कोडो के माध्यम से पैटर्न की पहचान की गई और कोडों को वर्गीकृत किया गया। इन श्रेणियों एवं प्रतिमानों के आधार पर विषयों की पहचान की गई, जिसके आधार पर अवधारणायें बनाई गई और इन अवधारणाओं के आधार पर अभिकथन किए गए।

आँकड़ों का संकलन

प्रस्तुत लेख में शोधकत्री द्वारा श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों के आधार पर कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्यों का संकलन किया गया है जो इस प्रकार है–

1– मूल प्रवृत्तियों से संबंधित संवेगों की पुष्टि– प्रस्तुत लेख में शोधकत्री द्वारा मूल प्रवृत्तियों से संबंधित संवेगों की पुष्टि मुख्य रूप से प्रेम, ईर्ष्या, प्रसन्नता एवं खुशी, अहंकार, दयालुता एवं झूठ आदि महत्वपूर्ण तथ्यों के आधार पर की गई है। जो इस प्रकार है–

1– प्रेम– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित उपदेशों में सिक्खों के प्रथम गुरू गुरूनानक देव जी के द्वारा दिये गये उपदेशों में प्रेम एवं करूणा का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। गुरू नानक देव जी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी को अपना मानते थे व सबसे प्रेम करते थे। इसी प्रकार सिक्खों के पंचम गुरू, गुरू अर्जुन देव जी अपने भाई पृथ्वी चन्द्र जी से बहुत प्रेम करते थे, जिस कारण अपने पिता गुरू रामदास जी की मृत्यु होने के बाद जब उन्हें गुरू गद्दी के लिए चुना गया तो उनके बड़े भाई पृथ्वी चन्द्र जी ने इसका विरोध किया तो गुरू अर्जुन देव जी ने कहा कि आप बड़े है, आप ही पगड़ी बाँधें, मैं तो आपका दास हूँ छोटा हूँ।। यह कथन उनका अपने भाई के प्रति अथाह प्रेम एवं सम्मान को दर्शाता है। ;।हतूंस –ैपदहीए 2000द्ध

2– ईर्ष्या– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलिक उपदेशों में गुरूओं द्वारा ईर्ष्या संबंधी कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का भी वर्णन किया गया है। सिक्खों के दूसरे गुरू, गुरू अंगददेव जी बड़े ही सहनशील, नम्र एवं साहित्य प्रेमी थे। अपने इसी स्वाभाव के कारण गुरू अंगददेव जी ने बहुत ही ख्याति एवं यश प्राप्त किया। खंडूर साहब में एक तपस्वी रहता था, जो जाटों का सरदार कहलाता था, वह

गुरू अंगददेव जी का यश देखकर उनसे ईर्ष्या करने लगा और उनकी निन्दा करने लगा। खंडूर साहब में 1601 में वर्षा नहीं हुई, भयंकर सूखा पड़ने लगा, जनता दुःखी हो गयी, सभी मिलकर तपस्वी के पास पहुँचे, और कहाँ कि आप अपने तप से वर्षा करा दीजिए। तपस्वी ने कहा गरू अंगददेव गृहस्थी होकर अपने को गुरू कहलवाता है और पूजा करवाता है इसी दोष के कारण इस गाँव में वर्षा नहीं हो रही है, पहले आप सब इस ढ़ोंगी गुरू को, गाँव से निकाले तभी वर्षा होगी। सभी गाँव वाले मिलकर गुरूजी के पास गये, गुरू जी ने कहा कि ठीक है यदि मेरे जाने से यहाँ वर्षा हो जायेगी तो मैं चला जाता हूँ।। गुरू जी गाँव छोड़कर चले गये, उनके जाने के बाद भी जब वर्षा नहीं हुई तो गाँव वालों को आश्चर्य हुआ और वह सब मिलकर तपस्वी के पास गये और उसे गाँव छोड़ने के लिए कहा। गुरू अमरदास जी के द्वारा समझान पर गाँव वाले गुरू अंगददेव जी के पास गये और उनसे क्षमा माँगी और उन्हें सम्मानपूर्वक गाँव लौटा लाये और गुरू जी के बाद ही गाँव में वर्षा होने लगी। सभी गाँव के लागों का गुरू जी पर पूरा विश्वास हो गया और ईर्ष्या करने वाले का परिणाम भी उसे मिल गया। ;।हतूंस –ैपदहीए 2000द्ध

3– प्रसन्नता एवं खुशी– सिक्खों के तृतीय गुरू, गुरू अमरदास जी सादा जीवन एवं उच्च, विचारधारा को मानने वाले थे। गुरू जी से मिलने के लिए, दूर–दूर से हिन्दू–मुसलमान एवं सिक्ख आते थे, किन्तु उनके रहने के लिए कोई खुले भवन की व्यवस्था नहीं थी इस हेतु गुरू जी ने अपने भतीजे सावनमल को खुला भवन बनवाने हेतु लकड़ी के लठ्ठों की व्यवस्था करने के लिए हरिपुर के राजा के पास भेजा। सावनमल अपने साथ पाँच सिक्खों को लेकर जिस दिन हरिपुर पहुँचे, संयोग से उस दिन एकादशी का व्रत था और राजा का हुक्म था कि कोई अनाज को हाथ नहीं लगायेगा, किन्तु सावनमल ने रोज की भाँति खाना बनाया स्वंय खाया और सबको खिलाया इस पर राजा बहुत नाराज हुये और सावनमल तथा सिक्खों को उनकी आज्ञा न मानने पर कारागार में डाल दिया। अगले दिन राजा के पुत्र को हैजा हो गया और वह मर गया। इस पर कुछ लोगों ने राजा से कहा कि आपने निर्दोष सिक्खों को कारागार में डाल दिया है, जिस कारण आपके पुत्र की मृत्यु हो गयी। आप उन्हें तुरन्त रिहा कर दीजिए एवं गुरू की शरण में जाइये। सावनमल को बुलाया गया और उनसे कहा गया कि वे उनके पुत्र को जीवित कर दें तो मं परिवार सहित गुरूद्वारा पर श्रद्धा स्थापित कर दूँगा। सावनमल ने राजा के पुत्र की देह के पास जाकर जपुजी साहिब का पाठ किया एवं गुरू अमरदास जी द्वारा दिये रूमाल का कोना धोकर लड़के के कान में डाल दिया तो लड़का जीवित हो गया। इस पर राजा और रानी बहुत खुश हो गये और राजा ने भवन बनवाने हेतु लकड़ियाँ भी भेज दी।

4– अहंकार– गुरू अमरदास जी अपने दोनों दामादों में से किसी एक को गुरू गद्दी देना चाहते थे अतः उन्होंने दोनों दामादों की परीक्षा ली। एक दिन गुरू जी ने अपने दामादों से कहा कि आप दोनों एक ऐसा चबूतरा बनाओ जिस पर बैठकर हम बावड़ी देखते रहे। दोनों ही दामादों ने चबूतरा बनाया किन्तु गुरू अमरदास जी ने दोनों ही दामादों के चबूतरे को गलत बताया और फिर

से बनाने के लिए कहा। ऐसा अमरदास जी ने कई बार किया जिससे गुरू जी के पहले दामाद रामा ने गुरू जी से कहा कि चबूतरा सही बना है आपको सही न लगे तो किसी और से बनवा लें मैं नहीं बनाऊँगा, किन्तु दूसरे दामाद रामदास जी ने हर बार गुरू जी को यही उत्तर दिया कि वह तो कम बुद्धि वाला है। अतः वे ही उसका मार्गदर्शन करें चबूतरा बनाने के लिये, जिससे गुरू जी रामदास जी का उत्तर सुनकर प्रसन्न हुये एवं उन्होंने रामदास जी से कहा कि तुम्हारी सेवा हमें बहुत पसंद हैं तुममें किंचित भी अहंकार नहीं है। तुम सेवा में आनन्द मगन रहते हो ये अच्छो बात है।

5– दयालुता– सिक्खों के पंचम गुरू अर्जुनदेव जी बड़े ही दयालु एवं धार्मिक प्रवृत्ति के महापुरूष थे। उनकी दयालुता का परिचय एक घटना से विदित होता है कि एक बार गुरू जी के दरबार में दो डोम बलवंत व सत्ते कीर्तन करते थे, उन्होंने गुरू जी से बेटी की शादी के लिये धन माँगा। गुरू जी ने उन्हें कीर्तन की सारी राशि देने को कहा किन्तु दोनों डोमों ने लेने से इंकार कर दिया और कीर्तन करना भी बंद कर दिया जिस पर गुरू जी ने उन्हें दरबार में आने की पाबन्दी लगा दी और किसी को भी इनकी सहायता करने से मना कर दिया, क्योंकि इन्होंने गुरू दरबार का अपमान किया, किन्तु भाई लाँधा जी से सिफारिश करने पर दयालु गुरू जी ने इन्हें माफ कर दिया। (ये स्तुति रामकली राग में थी, गुरू ग्रंथ साहिब के पृष्ठ 866)

6– झूठ– एक दिन गुरू अर्जुनदेव जी के पास श्रद्धालु आये और बोले गुरू जी हम गाँव के चौधरी, हमें झूठ बोलना पड़ता है, हम इसका कैसे त्याग करें? गुरू जी ने कहा आप एक धर्मशाला बनवाइये, वहाँ दोनों वक्त भजन किया करिये और प्रत्येक संध्या अपना झूठ संगत को सुना दिया करिये। उन्होंने कुछ दिन ऐसा किया, फिर उन्हें शर्म का एहसास होने लगा और उन्होंने झूठ बोलना, छोड़ दिया। गुरू जी के उपदेश बहुत ही स्वच्छ एवं सरल हुआ करते थे।

(2) माता–पिता एवं गुरूजनों की आज्ञा का पालन– गुरू ग्रंथ साहिब के बहुत से उपदेश हैं जो सद्मार्ग पर चलने एवं अपने गुरूओं और बड़ों की आज्ञा का पालन करने की शिक्षा देते है। गुरू नानक देव जी बहुत ही शान्त, हँसमुख, दयालु एवं दूसरों की सेवा करने वाले, अपने माता–पिता का सम्मान करने वाले एवं अपने गुरू के प्रति सत्कार करने वाले सज्जन महापुरूष थे। गुरूनानक देव जी के गुरू सदैव उनकी प्रशंसा किया करते थे। नानक जी के सद्विचारों व तीव्र बुद्धि से प्रभावित होकर अध्यापक उनके माता–पिता को धन्य मानते थे।

गुरू अंगददेव जी सदैव अपना सम्पूर्ण जीवन गुरूनानक जी के चरणों में रहकर व्यतीत करना चाहते थे। गुरूनानक जी भी यह जानते थे कि गुरू अंगददेव जी एक योग्य एक कर्मठ महापुरूष हैं। अतः उनकी योग्यता, औरों को बताने के लिए वह एक गुरू की भाँति उनकी परीक्षा लेते रहते थे और गुरू अंगरदेव जी भी सदैव गुरूनानक देव जी की प्रत्येक आज्ञा का पालन बिना किसी शंका के किया करते थे और उनका हृदय से सम्मान भी करते थे। इसी प्रकार गुरू रामदास

जी भी गुरू अमर दास जी के दामाद थे, किन्तु वह उनका हृदय से सम्मान करते थे, उनको पिता तुल्य मानते थे और अमरदास जी भी उन्हें पुत्र के समान प्रेम करते थे।

(3)– समपर्ण भाव– सिक्खों के नवें गुरू श्री गुरू तेग बहादुर जी समपर्ण भाव के प्रति मूरत थे। अपने पिता द्वारा गुरू गद्दी अपने छोटे भाई गुरू हरिराय जी को दिये जाने पर भी इन्होंने कोई आपत्ति नहीं दिखाई, किन्तु माता नानकी जी के अनुरोध करने पर, पिता हरगोविन्द जी ने माता का वचन दिया कि समय आने पर पुत्र तेग बहादुर जी को गुरू गद्दी अवश्य प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त गुरू तेग बहादुर जी बहुत ही साधु प्रकृति के व्यक्ति थे। किसी को भी कष्ट नहीं देना चाहते थे। धीरमल की ईर्ष्या और रामराय की गुरू गद्दी प्राप्त करने की साजिशों से दुःखी होकर इन्होंने तीर्थ यात्रा का विचार बनाया, जिससे इन्हें सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सके। इनके अन्दर किसी भी प्रकार का लोभ या ईर्ष्या नहीं थी, हमेशा त्याग एवं समपर्ण भाव की भावना थी। (Agrawal & Singh, 2000)

(4) दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में उसे ही सच्चा गुरूमुख कहा गया है जो अपने कर्तव्यों एवं उत्तददायित्वों को भली–भाँति पूर्ण करने में एवं उसका निर्वाहन करने में सक्षम होता है तथा जो दूसरों की भावनाओं का आदर एवं सम्मान करता है वह ही सही मायने में एक सच्चा सज्जन है। गुरूवाणी में कहा गया है– सरवत का भला, मन नोवा माति उच्ची, दें तेग फतेह। अर्थात् वह सज्जन जो सबका भला सोचते है, जो घमंड नहीं करते, और ऊँची सोच रखते हैं, सबको आदर देते हैं, वहीं सही मायने में गुरू के सच्चे भक्त होते है।

(5) उत्तम वातावरण– मानव जीवन एवं उत्तम वातावरण आपस में घनिष्ठता से सम्बन्धित है। गुरू नानक देव जी ने जपजी साहिब में इसकी महत्ता भी प्रकट की है– "पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महत।" उपरोक्त श्लोक के अनुसार यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो पानी, हवा धरती के ये विशाल भण्डार बहुत ही मूल्यवान है, जिनके कारण प्रत्येक व्यक्ति का जीवन मूल्यवान है। इन प्राकृतिक संसाधनों के अभाव में मनुष्य स्वस्थ तथा उत्तम जीवन नहीं जी सकता है।।

मनुष्य के मानसिक विकास के साथ–साथ उसका शारीरिक विकास भी तभी सम्भव है जब उसे उपयुक्त वातावरण प्राप्त होगा।

(6)– बालक का सर्वांगीण विकास– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित उपदेशों में सभी गुरूओं द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास हेतु स्वाध्याय, कर्मठता, नीत्य एवं समयपूर्ण अपने कार्यों को करने की, ईश्वर की सच्ची अराधना करने की, दूसरों का सम्मान एवं आदर करने की, बिना किसी छल, कपट एवं द्वेष के, जीवन जोने की बात कही गयी है।

गुरू नानक जी ने अपने उपदेशों में यह कहा है कि कोई भी मनष्य ऊँचा अथवा नीचा नहीं है। ऊँचा वहीं है, जो नेक कार्य करे, नीच वह है जो नीच कार्य करे। अतः गुरूवाणी में

कहा गया है कि बालक का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब वह शरीर, मन एवं धर्म सभी से अच्छे कर्म करे।

(7)– उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में सिक्खों के छः गुरूओं की वाणी एवं उपदेशों के अतिरिक्त कई सन्तों एवं भक्त कवियों की भी वाणी का संकलन किया गया है। इन सभी गुरूओं द्वारा दिये गये उपदेशों में सदैव मानव के उत्तम व्यक्तित्व की बात परिलक्षित होती है। गुरूनानक देव जी, गुरू अंगददेव जी एवं अन्य गुरू स्वयं एक उत्तम व्यक्तित्व को दर्शाने वाले महान व्यक्तियों में से एक हैं, जिनके अनूठे व्यक्तित्व की छाप न केवल सिक्ख धर्म के अनुयायियों पर, अपितु संसार के सभी प्राणियों पर दृष्टिगोचर होती है।

आँकड़ों का विश्लेषण

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन इस प्रकार है–

(1) मूल प्रवृत्तियों से संबंधित संवेगों की पुष्टि– प्रस्तुत लेख में शोधकत्री ने प्रमुख संवेगों प्रेम, ईर्ष्या, प्रसन्नता एवं खुशी, अहंकार, दयालुता एवं झूठ इत्यादि के माध्यम से गुरू ग्रंथ में संकलित उपदेशों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में करते हुए यह दर्शाया है कि आज शिक्षा में इन महत्वपूर्ण संवेगों का सही प्रकार से मार्गदर्शन होना अति आवश्यक है, जिसका प्रभाव न केवल एक अकेले बालक पर अपितु सम्पूर्ण मानव जाति पर परिलक्षित होता है।

यदि बालक अपने शैक्षणिक गतिविधियों में प्रेम, सहानुभूति, दया एवं परोपकारिता तथा प्रसन्नतापूर्वक भाग लेते हैं तो न केवल वह अपने जीवन को अपितु अपने सहयोगियों के जीवन को भी सद्मार्ग पर ला सकें।गे। अहंकार, द्वेष एवं झूठ जैसी अनैतिक गतिविधियों को सिक्ख गुरूओं के जीवन से जोड़कर यदि बालकों को अवगत कराया जाये तो वह सही–गलत तथा उचित एवं अनुचित के अर्थ को भली–भाँति समझ सकेंगे।

(2) माता–पिता एवं गुरूओं की आज्ञा का पालन– आज हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या युवा पीढ़ी द्वारा अपने माता–पिता एवं गुरूजनों का सम्मान न करने की है। जो इतना विकराल रूप धारण कर चुकी है कि यदि इस समस्या का समाधान शीघ्र नहीं किया गया तो शीघ्र ही वह समय आ जायेगा जब आज की युवा पीढ़ी अपनी भारतीय संस्कृति का परित्याग कर, पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते हुये अपने पूर्वजों, माता–पिता एवं गुरूजनों का सम्मान करना पूर्णरूप से त्याग देगी। अतः इस समस्या के निवारण हेतु यदि आज की शिक्षा में गुरूवाणी में संकलित सिक्ख गुरूओं द्वारा दिये गये उच्च विचारों को अपनाया जाये तो युवा पीढ़ी को पथ भ्रष्ट होने से रोका जा सकता है।

(3)– समपर्ण भाव– सिक्ख गुरूओं द्वारा दिये गये त्याग, बलिदान एवं समपर्ण भाव को यदि आज की शिक्षा में अवगत कराया जाये तो छात्रों में एक दूसरे के प्रति न केवल समपर्ण भाव अपतिु अहंकार, घमण्ड एवं ईर्ष्या जैसे अवगुणों का भी नाश होगा। छात्र समपर्ण भाव अपनाकर न केवल अपना अपित् अपने समाज का भी उद्धार कर सकेंगे।

आज का मानव केवल अपने स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है फिर इसके लिए चाहे उसे दूसरों का अहित भी करना पड़े तो उसे वह करता है। अतः आज की आवश्यकता मानव को परोपकारी, सदाचारी एवं निष्कपट भावना से ओत–प्रोत बनाने की है।

(4)– दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना–इतिहास गवाह है कि सिक्ख गुरूओं ने बिना किसी धर्म–जाति का भेदभाव किये सभी की भावनाओं का सम्मान किया और इस हेतु अपने प्राणों तक को न्यौछावर कर दिया। आज के समय में भी शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी सोच की नितान्त आवश्यकता है, क्योंकि यदि हम दूसरों की भावनाओं का सम्मान नहीं करेंगे तो दूसरा व्यक्ति भी आपकी भावनाओं, आपकी जरूरतों को कोई महत्व नहीं देगा। शिक्षा के क्षेत्र में न केवल छात्र का छात्र से अपितु छात्र का शिक्षक से अपने सहपाठियों, अपने अभिभवकों, अपने विद्यालय के कर्मचारियों, सभी के साथ अच्छे संबंध होना आवश्यक होता है, जिससे हम एक–दूसरे का आदर कर सकें, चाहे वह पद में हमसे बड़ा या छोटा हो।

(5)– उत्तम वातावरण–गुरू वाणी में संकलित, सिक्ख गुरूओं के विचार एवं उपदेश न केवल मानवीय संबंधों एवं व्यवहारों को परिष्कृत करने में अग्रणी थे अपितु जिस उपयुक्त वातावरण में यह संबंध एवं व्यवहार अच्छे से फलीभूत हो सकते हैं यह उनका भी वर्णन भली–भाँति करते है।

गुरू नानक देव जी का कहना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने से पहले एक प्राकृतिक प्राणी भी है। अतः वह इस प्रकृति का संरक्षक है न कि भक्षक जिस हेतु उसे अपने वातावरण को स्वच्छ एवं साफ सुथरा रखना चाहिए, क्योंकि जैसा कि अरस्तू ने कहा है कि ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।'' अतः यदि मनुष्य अपने वातावरण को अच्छा रखेगा तो उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास भी उत्तम होगा।

(6)– बालक का सर्वांगीण विकास– गुरूवाणी में दिये गये गुरूओं के उपदेशों से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है जब वह सद्मार्ग पर चले, अच्छे से कर्म करें, निन्दा न करें, सदा दूसरों की सहायता करें, किसी को धोखा न दे, एवं किसी के साथ बुरा आचरण न करें। यदि आज की वर्तमान शिक्षा में गुरूओं द्वारा दी गयी वाणी का समुचित रूप से क्रियान्वयन किया जाये तो बालक का न केवल शारीरिक एवं मानसिक अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बहुमुखी विकास सम्भव है।

(7)– उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण– गुरूवाणी में संकलित उपदेशों एवं सिक्ख गुरूओं के जीवन से जुड़ी बातों को यदि शिक्षा में, कहानियों, कथाओं एवं रंगमंच के रूप में प्रस्तुत किय जाये तो बालक के व्यक्तित्व पर इसकी अमुक छाप परिलक्षित हो सकती है। छात्र महान गुरूओं के जीवन से सीख लेकर अपने व्यक्तित्व का उत्कृष्ट निर्माण कर सकते हैं जो न केवल बाहरी रूप से आकर्षित हो अपितु आन्तरिक रूप से भी मर्मज्ञ एवं हृदयग्राही हो।

परिणामों की विवेचना

प्रस्तुत लेख "श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन वर्तमान परिस्थितियों में मील का पत्थर साबित हो सकता है, क्योंकि वर्तमान समय विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में तो चरम सीमा तक पहुँच गया है, परन्तु कहीं न कहीं आज का मानव इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में अपने जीवन के बहुमूल्य आदर्शों, नैतिक विचारों, मूल्यों एवं सद्गुणों को पीछे छोड़ता चला जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम यह है कि आज हम पूरी तरह से स्वार्थी, लालची एवं हिंसक प्रवृत्ति के हो गये हैं।

प्रत्येक समाज की युवा पीढी समाज का गौरव होती है जो उसके सम्मान, प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि को ऊँचाईयों तक लेकर जाती है, किन्तु अफसोस की न केवल आज की युवा पीढी अपितु हमारे बड़े, बूढ़े हमारे जीवन के आदर्श वह सभी इस चमचमाती भौतिकवादी दुनिया के जाल में दिन–पतिदिन धँसते चले जा रहे हैं और अपने मूल्यों, आदर्शों, अपनी संस्कृति को पूरी तरह से भूलते जा रहे है। अतः आज हमें आवश्यकता है श्री गुरू ग्रंथ साहिब जैसे महान ग्रंन्थो में लिखे उपदेशों, गुरूओं की वाणियों को जानने, उनको अपने जीवन में उतारने की है, जिससे हम अपने आने वाले भविष्य को अच्छा, उत्कृष्ट एवं संस्कारों से परिपूर्ण बना सकें, जहाँ कोई केवल अपने स्वार्थ के लिए न जीकर सभी के भले के लिये सोचे।

इसके अतिरिक्त आज मानव जीवन का सबसे बड़ा दोष है क्रोध एवं अहंकार जो उसे अपने जीवन में सफल होने में एक अवरोधक के रूप से कार्य कर रहा है। जिस दिन मानव अपने जीवन से इन्हें निकाल फेकेंगा, उसी दिन वह स्वार्थहीन हो जायेगा और सबके भले के लिये सोचने लगेगा और उसी दिन से यह युग कलयुग न कहलाकर सतयुग कहलाने लगेगा।

प्रस्तुत लेख में शोधकत्री द्वारा सिक्खों के धर्म ग्रन्थ "गुरू ग्रन्थ साहिब में निहित उपदेशों को ही वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन हेतु आधार बनाया गया है।

शोधकत्री द्वारा पूर्व में हुये गुरू ग्रंथ संबंधी शोधकार्यों की समीक्षा करने पर यह ज्ञात हुआ है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक पहलुओं का

विस्तृत अध्ययन किया गया है एवं उनकी शैक्षिक उपादेयता को भी जानने का प्रयास किया गया है, किन्तु वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन पर प्रकाश नहीं डाला गया है। अतः शोधकत्री द्वारा प्रस्तुत लेख एक प्रकार से सेतुबन्ध का ही प्रयास है एवं इस विश्वास पर आधारित है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब के उपदेशों का यह संगम , शिक्षा जगत को निश्चित ही एक नया आयाम देने में सक्षम होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव

भावी शोध कार्य हेतु शोधकत्री के निम्न सुझाव इस प्रकार है–

1– श्री गुरू ग्रंथ साहिब के शैक्षिक विचारों एवं हिन्दू धर्म ग्रन्थों में निहित शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

2– ''श्री गुरू ग्रंथ साहिब'' में निहित उपदेशों की समकालीन ''रामचरितमानस'' में निहित उपदेशों से तुलना की जा सकती है।

3– श्री गुरूनानक देव जी एवं श्री गुरू अर्जुन देव जी के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4– श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शिक्षा नीति (2020) के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है।

5– श्री ''गुरू ग्रंथ साहिब मे निहित उपदेशों का विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1– गुप्ता, डॉ0 हरिराम, ''गुरूनानक एवं जीवन वृत्त'' गुरूनानक फाउण्डेशन, नई दिल्ली।

2– चौहान, डॉ0 प्रताप सिंह, (1980)''संतमत'', ग्रन्थम पब्लिकेशन रामबाग, कानपुर।

3– वर्मा, हरिश्चन्द्र, (2006) ''मध्यकालीन भारत'', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

4– सिंह, स्वामी अर्जुन, (1960) '' श्री गुरू ग्रन्थ साहिब'', मेहरचंद एण्ड सन्स, दिल्ली।

5– शर्मा, आए0ए0, (2009)''शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी'', इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

6– श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, (1980) भुवन वाणी ट्रस्ट प्रभाकर, लखनऊ।

7– कपिल, डॉ0 एच0 के0, (2007) ''अनुसंधान विधियाँ'', एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा

8– राय, पारसनाथ राय, सी0पी0, (1973)'' अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा

9— हिन्दी साहित्य— (1970)''नानक जीवन युग एवं शिक्षायें, ''गुरूनानक फाउण्डेशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

10— सिंह, भाई जसबीर, (2011) ''श्री गुरू प्रताप ग्रन्थ'', भुवनवाणी मौसमबाग (सीतापुर रोड), लखनऊ

11— शर्मा, पं0 मधुसूदन, (2011) ''गुरू नानक देव'', मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली

12— अग्रवाल, सुरेश चन्द्र, सिंह, ज्ञानी तेलपाल, (2000)''दस गुरू जीवन चरित्र और उपदेश'', रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

13— महाराज, स्वामी कृष्णानन्द जी, (2004)''एक ओंकार'', साधना पब्लिकेशन्स, दिल्ली

14— सिंह, अरूण कुमार, (2017), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली

15— रस्क, आर0आर, (1960)''शिक्षा के दार्शनिक आधार'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

16— सक्सेना, सरोज, (1996)'' शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'', साहित्य प्रकाशन, आगरा

17— त्रिवेदी, सुरेन्द्र कुमार, (1963)'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार'', ग्रन्थम कानपुर

18— सिंह, डॉ गया, (2013)''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', प्रकाशक विनय रखेजा, आर लाल बुक डिपो, मेरठ, प्रथम संस्करण

19— पचौरी, डॉ0 गिरीश, (2006)''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'', मेरठ, नवीन संस्करण

20— सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप, कुमार, संजय, (2007)''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, प्रकाशक, आर लाल बुक डिपो, मेरठ प्रथम संस्करण

21— सुखिया, एस0पी0 मेहरोत्रा, पी0वी मेहरोत्रा, आर0 एन0, (1990) ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

22— डॉ0 उमा रानी, (2012) ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'', प्रकाशक, आलोक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ, नवीनतम संस्करण

23. Agrawal, S. C., & Singh, G. T. (2000). *Das Guru Jeevan Charitra Aur UpdeshA* (First). Randhir Prakashan.

Deshbandhu Online Portal. (2012, January 7).

Deshbandhu Online Portal. (2013, February 25).

25— समाचार पत्र

1— देशबन्धु ऑनलाइन पोर्टल, जनवरी 7, 2012 ;*क्मौइंदकीन व्दसपदम च्वतजंसए* 2012द्ध

2— देशबन्धु ऑनलाइन पोर्टल, फरवरी 25, 2013;*क्मौइंदकीन व्दसपदम च्वतजंसए* 2013द्ध

26— इण्टरनेट

1— मुक्त ज्ञानकोष विकिपीडिया से ''सिक्ख धर्म'', दैनिक जागरण, 29 अगस्त 2006, पृष्ठ 11, 11 अप्रैल 2013

2– मुक्त ज्ञानकोष विकिपीडिया से, ''सिक्ख इतिहास''

3– **www.jagran.yahoo.com/dharmmarg**

4– http://hi,bharatdiscovery.org नानक देव गुरू, भारत कोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर

5– webdunia, http://hindi.webdunia.com

27– मासिक पत्रिका

1– गुरूमति ज्ञान, ''श्री दरबार साहिब, खंडर साहिब, जिला तरनतारन (पंजाब), ''शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर (अप्रैल 2010)

2– गुरमति ज्ञान, '' गुरूद्वारा श्री ननकाणा साहिब, पाकिस्तान'', शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी (नवंबर 2008)

3– गुरमति ज्ञान, ''गुरूद्वारा श्री होलबढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब'', शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर (मार्च 2009)

4– ''सिख फुलवाडी'', लुधियाना, (सितम्बर 2004)

5– संक्षेप इतिहास दस गुरू साहिबबान, सिख मिशनरी कालेज, लुधियाना

6– सिफ्त सलाल, निरोल धार्मिक पत्रिका, प्रकाशक गुरूमत सतसंग सभा, अमृतसर

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-01, Issue-02, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2023/16

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

चनप्रीत कौर

For publication of research paper title

"श्री गुरू ग्रंथ साहिब में निहित उपदेशों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com